EDUSCHOOL
ACADEMIC RESEARCH & PUBLISHERS

INTERNATIONAL JOURNAL OF INDIAN LANGUAGE RESEARCH STUDIES (IJILRS)
(Open Access, Double-Blind Peer Reviewed Journal)
ISSN Online: 3108-1797 ISSN Print: 3139- 3799

लोककथाओं और आदिवासी मौखिक परंपराओं का संरक्षण: डिजिटल संग्रहण की चुनौतियाँ और संभावनाएँ

Sandhya E. N

Assistant Professor, Department of Hindi, Christ College (Autonomous), Irinjalakuda, Kerala, India.

Article information
Received: 10th December 2025
Received in revised form: 13th January 2026
Accepted: 15th February 2026
Available online: 25th March 2026

Volume: 2
Issue: 1
DOI: https://doi.org/10.63090/IJILRS/3108.1797.0017

Abstract

This research paper presents an analysis of contemporary challenges and possibilities associated with the digital preservation of Indian folk tales and tribal oral traditions. Under the pressures of globalization and modernization, oral traditions are rapidly disappearing, and digital technology has emerged as an important tool for their preservation.The study provides a comprehensive evaluation of technological, cultural, linguistic, and ethical dimensions. The research finds that while digital archiving offers immense possibilities, it also creates serious challenges such as the loss of cultural context, inequality in technological access, the complexity of intellectual property rights, and issues related to maintaining authenticity. The paper suggests that a community-centered approach, multilingual digital platforms, and culturally sensitive technological interventions are essential to ensure sustainable preservation. This study makes a significant contribution to the development of digital humanities in the Indian context.

सारांश

यह शोध-पत्र भारतीय लोककथाओं और आदिवासी मौखिक परंपराओं के डिजिटल संरक्षण से जुड़ी समसामयिक चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के दबाव में तेजी से विलुप्त होती मौखिक परंपराओं को बचाने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरी है। यह अध्ययन तकनीकी, सांस्कृतिक, भाषायी और नैतिक आयामों का समग्र मूल्यांकन करता है। शोध में पाया गया है कि जहाँ डिजिटल संग्रहण असीमित संभावनाएँ प्रदान करता है, वहीं सांस्कृतिक संदर्भ का नुकसान, तकनीकी पहुँच की असमानता, बौद्धिक संपदा अधिकारों की जटिलता और प्रामाणिकता बनाए रखने की चुनौतियाँ गंभीर बाधाएँ उत्पन्न करती हैं। पत्र में सुझाव दिया गया है कि समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण, बहुभाषी डिजिटल प्लेटफॉर्म और सांस्कृतिक संवेदनशीलता से युक्त तकनीकी हस्तक्षेप ही टिकाऊ संरक्षण सुनिश्चित कर सकते हैं। यह शोध भारतीय संदर्भ में डिजिटल मानविकी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

Keywords: - डिजिटल संरक्षण, मौखिक परंपरा, सांस्कृतिक धरोहर, डिजिटल मानविकी, सांस्कृतिक संवेदनशीलता

1. प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग उसकी समृद्ध मौखिक परंपराएँ हैं जो सहस्राब्दियों

से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही हैं।[1] लोककथाएँ, मिथक, गाथागीत, लोकगीत, पहेलियाँ और आदिवासी समुदायों की मौखिक स्मृतियाँ सामूहिक ज्ञान, सांस्कृतिक मूल्यों और ऐतिहासिक अनुभवों का भंडार हैं। ये परंपराएँ केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि सामाजिक संगठन, नैतिक शिक्षा, पारिस्थितिकीय ज्ञान और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।[4]

हालाँकि, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण और प्रमुख भाषाओं के प्रभुत्व ने इन अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों को गंभीर खतरे में डाल दिया है। युनेस्को की रिपोर्टों के अनुसार, दुनिया भर में हजारों भाषाएँ और उनके साथ जुड़ी मौखिक परंपराएँ विलुप्ति के कगार पर हैं।[2] भारत में भी, विशेष रूप से आदिवासी समुदायों की मौखिक परंपराएँ तेजी से लुप्त हो रही हैं क्योंकि युवा पीढ़ी शहरों की ओर पलायन कर रही है और पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों से विमुख हो रही है।[8]

इस संकट के बीच, डिजिटल प्रौद्योगिकी ने संरक्षण का एक नया मार्ग प्रस्तुत किया है। डिजिटल संग्रहण (Digital Archiving) न केवल इन परंपराओं को दस्तावेजीकृत करने का अवसर देता है,[5] बल्कि उन्हें व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने, शोध के लिए सुलभ बनाने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने की संभावना भी प्रदान करता है। लेकिन यह प्रक्रिया सरल नहीं है। डिजिटल संरक्षण तकनीकी, सांस्कृतिक, भाषायी, नैतिक और कानूनी चुनौतियों से भरी हुई है।[9,10]

यह शोध-पत्र इन्हीं चुनौतियों और संभावनाओं का व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल माध्यम लोककथाओं और आदिवासी मौखिक परंपराओं के संरक्षण में किस प्रकार सहायक हो सकते हैं और किन बाधाओं को दूर करना आवश्यक है। यह पत्र भारतीय संदर्भ में डिजिटल मानविकी (Digital Humanities) के विकास में योगदान देने का प्रयास करता है।[7]

2. सैद्धांतिक आधार

2.1. मौखिक परंपराओं का महत्व

मौखिक परंपराओं को समझने के लिए वाल्टर ओंग की अवधारणा "प्राथमिक मौखिकता" (Primary Orality) महत्वपूर्ण है।[3]

ओंग के अनुसार, मौखिक संस्कृतियाँ अपनी स्मृति, ज्ञान और विश्वदृष्टि को लेखन से भिन्न तरीकों से संरचित करती हैं। मौखिक परंपराएँ पुनरावृत्ति, सूत्रबद्धता, संदर्भ-निर्भरता और सामूहिक स्मृति पर निर्भर होती हैं।[3] वे स्थिर पाठ नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक प्रस्तुति में परिवर्तनशील और जीवंत होती हैं। भारतीय संदर्भ में, ए. के. रामानुजन ने लोककथाओं की "वाचिक परंपरा" (Oral Tradition) को विश्लेषित करते हुए उनकी बहुरूपता और संदर्भ-संवेदनशीलता पर बल दिया है।[4] उन्होंने दिखाया है कि एक ही कथा अलग-अलग समुदायों, क्षेत्रों और समयों में भिन्न रूप धारण करती है।[1,4]

2.2. डिजिटल संग्रहण का सिद्धांत

डिजिटल संग्रहण की अवधारणा "डिजिटल संरक्षण" (Digital Preservation) के व्यापक ढाँचे में आती है।[5] यह केवल सामग्री को डिजिटल प्रारूप में परिवर्तित करना नहीं है, बल्कि उसे दीर्घकालिक रूप से सुलभ, उपयोगी और प्रामाणिक बनाए रखना है। डिजिटल संग्रहण की प्रमुख अवधारणाएँ हैं: मेटाडेटा (Metadata), अंतर-संचालनीयता (Interoperability), प्रामाणिकता (Authenticity), और दीर्घकालिक पहुँच (Long-term Access)।[5]

2.3. सांस्कृतिक धरोहर और डिजिटल मानविकी

यूनेस्को की "अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर" (Intangible Cultural Heritage) की अवधारणा इस शोध के लिए केंद्रीय है। 2003 के कन्वेंशन के अनुसार, मौखिक परंपराएँ और अभिव्यक्तियाँ अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का प्रमुख घटक हैं।[6] इन परंपराओं का संरक्षण केवल दस्तावेजीकरण नहीं है, बल्कि उन्हें जीवित रखना और समुदायों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है।[6,9]

डिजिटल मानविकी के संदर्भ में, सुसान श्राइबमैन और रे सीमन्स का कार्य महत्वपूर्ण है।[7] वे दिखाते हैं कि डिजिटल उपकरण मानविकी अनुसंधान को नए तरीकों से संभव बनाते हैं—पाठ विश्लेषण, दृश्यीकरण, नेटवर्क विश्लेषण और सहयोगात्मक शोध के माध्यम से।[7]

3. लोककथाओं और आदिवासी मौखिक परंपराओं की वर्तमान स्थिति

भारत में 700 से अधिक आदिवासी समुदाय हैं जिनकी अपनी विशिष्ट भाषाएँ, संस्कृतियाँ और मौखिक परंपराएँ हैं।[8] इनमें संथाली, गोंडी, भीली, कुड़ुख, मुंडारी और अनगिनत अन्य भाषाओं में समृद्ध मौखिक साहित्य मौजूद है। इसी प्रकार, गैर-आदिवासी समुदायों में भी क्षेत्रीय लोककथाओं की विशाल परंपरा है—पंचतंत्र, कथासरित्सागर, अलिफ लैला और लोक-महाकाव्यों से लेकर स्थानीय देवी-देवताओं की कथाएँ।[1,4]

3.1. विलुप्ति के कारण

- भाषायी विस्थापन: प्रमुख भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी) के बढ़ते प्रभाव से छोटी भाषाओं और बोलियों का ह्रास हो रहा है। Ethnologue के अनुसार, भारत की 197 भाषाएँ संकटग्रस्त हैं।[8]
- सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन: आदिवासी युवाओं का शहरों की ओर पलायन, पारंपरिक व्यवसायों का त्याग और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक ज्ञान की उपेक्षा।[2,8]
- वृद्ध कथावाचकों का निधन: मौखिक परंपराओं के वाहक मुख्यतः वृद्ध सदस्य हैं। उनके निधन के साथ अमूल्य ज्ञान भंडार भी समाप्त हो जाता है।
- मीडिया और तकनीकी प्रभाव: टेलीविजन, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने पारंपरिक कथा-प्रस्तुति के स्थानों को प्रतिस्थापित कर दिया है।
- सांस्कृतिक आत्म-सम्मान की कमी: आधुनिकीकरण के दबाव में कई समुदाय अपनी पारंपरिक संस्कृति को पिछड़ापन मानने लगे हैं।

3.2. वर्तमान संरक्षण प्रयास

भारत में लोककथाओं के संरक्षण के प्रयास औपनिवेशिक काल से ही होते रहे हैं।[1] विलियम क्रुक, वेरियर एल्विन जैसे विद्वानों ने महत्वपूर्ण संग्रह तैयार किए। स्वतंत्रता के बाद, राष्ट्रीय लोककला संग्रहालय (दिल्ली), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA), और विभिन्न राज्य लोक संस्कृति अकादमियों ने लोककथाओं के दस्तावेजीकरण में योगदान दिया है। हाल के वर्षों में, कुछ गैर-सरकारी संगठन और व्यक्तिगत शोधकर्ता डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर रहे हैं। "People's Linguistic Survey of India" और "Living Tongues Institute" जैसी परियोजनाओं ने संकटग्रस्त भाषाओं और उनकी मौखिक परंपराओं का डिजिटल दस्तावेजीकरण किया है।

4. डिजिटल संग्रहण: संभावनाएँ और लाभ

डिजिटल प्रौद्योगिकी मौखिक परंपराओं के संरक्षण में कई अभूतपूर्व अवसर प्रदान करती है:[5,7]

- व्यापक पहुँच और वितरण: डिजिटल संग्रह इंटरनेट के माध्यम से वैश्विक दर्शकों तक पहुँच सकते हैं। यह न केवल शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी है, बल्कि प्रवासी समुदाय के सदस्य भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रह सकते हैं।
- बहुमाध्यमिक दस्तावेजीकरण: डिजिटल माध्यम ऑडियो, वीडियो, पाठ, छवियों और इंटरैक्टिव सामग्री को एक साथ संग्रहित कर सकते हैं।[5] यह मौखिक परंपराओं की संपूर्णता को कैद करने में सहायक है—कथावाचक के हाव-भाव, स्वर, संदर्भ और दर्शकों की प्रतिक्रिया सब दर्ज हो सकते हैं।
- खोज और पुनर्प्राप्ति क्षमता: मेटाडेटा और खोज तकनीकों के माध्यम से, डिजिटल संग्रह में विशाल सामग्री को सुव्यवस्थित और खोजने योग्य बनाया जा सकता है।[5,7]
- सहयोगात्मक अनुसंधान: डिजिटल संग्रह विभिन्न विषयों—मानवशास्त्र, भाषाविज्ञान, साहित्य, इतिहास—के शोधकर्ताओं के लिए साझा संसाधन बन सकते हैं।[7]
- शैक्षणिक उपयोग: डिजिटल संग्रह स्कूलों और विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम सामग्री के रूप में उपयोग किए जा सकते हैं।
- दीर्घकालिक संरक्षण: भौतिक माध्यम समय के साथ क्षतिग्रस्त हो जाते हैं, लेकिन डिजिटल सामग्री को उचित रखरखाव के साथ अनिश्चित काल तक संरक्षित किया जा सकता है।[5]

5. डिजिटल संग्रहण की चुनौतियाँ

डिजिटल संग्रहण की संभावनाएँ उत्साहजनक हैं, लेकिन इसके साथ गंभीर चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं:

5.1. तकनीकी चुनौतियाँ

अप्रचलन (Obsolescence): डिजिटल प्रौद्योगिकी तेजी से बदलती है।[5] फाइल फॉर्मेट, सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर जो आज मानक हैं, दस वर्ष बाद अप्रचलित हो सकते हैं। माइग्रेशन की आवश्यकता: डिजिटल सामग्री को नियमित रूप से नए फॉर्मेट और प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित करना होता है, जो महंगा और श्रमसाध्य है।[5]

5.2. भाषायी और लिपि संबंधी चुनौतियाँ

भारत में सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, जिनमें से कई की कोई लिखित लिपि नहीं है।[8] ध्वन्यांकन (Transcription): मौखिक सामग्री को पाठ में परिवर्तित करना जटिल है, विशेषकर जब भाषा की मानक लिपि न हो। बहुभाषिकता: एक ही कथा में कई भाषाओं और बोलियों का मिश्रण हो सकता है। यूनिकोड समर्थन: सभी भारतीय लिपियों के लिए यूनिकोड समर्थन उपलब्ध है, लेकिन कई डिजिटल प्लेटफॉर्म इन्हें ठीक से प्रदर्शित नहीं करते।

5.3. सांस्कृतिक और नैतिक चुनौतियाँ

संदर्भ का नुकसान: मौखिक परंपराएँ अपने सांस्कृतिक, सामाजिक और भौगोलिक संदर्भ में ही पूर्ण अर्थ रखती हैं।[3,4] डिजिटल संग्रहण में यह संदर्भ खो सकता है। प्रामाणिकता की चिंता: डिजिटल संपादन की आसानी से मूल सामग्री की प्रामाणिकता पर प्रश्न उठ सकते हैं। सांस्कृतिक संवेदनशीलता: कुछ मौखिक परंपराएँ पवित्र, गुप्त या लिंग/आयु-विशिष्ट होती हैं। इन्हें सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रखना सांस्कृतिक मानदंडों का उल्लंघन हो सकता है।[9]

5.4. बौद्धिक संपदा और कानूनी मुद्दे

स्वामित्व: लोककथाओं और मौखिक परंपराओं का स्वामित्व किसका है?[10] व्यक्तिगत कथावाचक का, समुदाय का, या ये "सार्वजनिक डोमेन" हैं? वाणिज्यिक उपयोग: डिजिटल सामग्री का व्यावसायिक दोहन हो सकता है। समुदाय को लाभ कैसे मिले, यह महत्वपूर्ण प्रश्न है। सांस्कृतिक विनियोग: डिजिटल सुलभता से सांस्कृतिक विनियोग का खतरा बढ़ता है।[9,10]

5.5. संसाधन और बुनियादी ढांचे की कमी

वित्तीय संसाधन: उच्च गुणवत्ता का डिजिटल संग्रहण महंगा है। तकनीकी विशेषज्ञता: डिजिटल संग्रहण के लिए तकनीकी, भाषायी और सांस्कृतिक विशेषज्ञता का संयोजन चाहिए। डिजिटल विभाजन: ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता की कमी है।

5.6. गतिशीलता बनाम स्थिरीकरण का तनाव

मौखिक परंपराएँ स्वभाव से गतिशील हैं—वे प्रत्येक प्रस्तुति में बदलती हैं।[3,4] डिजिटल संग्रहण एक संस्करण को स्थिर करता है, जो मौखिक परंपरा की मूल प्रकृति के विरुद्ध है। यह तनाव डिजिटल संरक्षण की मूलभूत चुनौती है।

तालिका 1: डिजिटल संग्रहण में प्रमुख चुनौतियाँ और समाधान

चुनौती क्षेत्र	प्रमुख समस्याएँ	प्रस्तावित समाधान
तकनीकी	फाइल फॉर्मेट अप्रचलन, डेटा हानि	ओपन स्टैंडर्ड, नियमित माइग्रेशन
भाषायी	ट्रांसक्रिप्शन, बहुभाषिकता	यूनिकोड समर्थन, ऑडियो-प्रथम
सांस्कृतिक	संदर्भ हानि, प्रामाणिकता	मेटाडेटा, समुदाय भागीदारी
नैतिक	सहमति, गोपनीयता	सूचित सहमति, स्तरीय पहुँच
कानूनी	स्वामित्व, विनियोग	विशिष्ट कानून, समुदाय अधिकार
संसाधन	वित्त, विशेषज्ञता	सहयोग, प्रशिक्षण

6. निष्कर्ष

लोककथाओं और आदिवासी मौखिक परंपराओं का डिजिटल संग्रहण एक जटिल लेकिन अत्यावश्यक कार्य है।[5,6] यह केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और राजनीतिक आयामों वाला गहन हस्तक्षेप है।[9] डिजिटल प्रौद्योगिकी निस्संदेह विलुप्त होती परंपराओं को संरक्षित करने, व्यापक पहुँच सुनिश्चित करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस अमूल्य धरोहर को बचाने की संभावनाएँ प्रदान करती है।[7]

हालाँकि, यह प्रक्रिया गंभीर चुनौतियों से भरी है। तकनीकी अप्रचलन, भाषायी जटिलताएँ, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, बौद्धिक संपदा के मुद्दे[10] और संसाधनों की कमी को संबोधित किए बिना सफल और नैतिक डिजिटल संग्रहण संभव नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मौखिक परंपराओं की गतिशील और जीवंत प्रकृति को डिजिटल माध्यम में कैसे बनाए रखा जाए।[3]

इस शोध के मुख्य निष्कर्ष हैं:

- समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण अनिवार्य है: बिना समुदाय की सक्रिय भागीदारी, सहमति और स्वामित्व के डिजिटल संग्रहण न तो प्रामाणिक होगा और न ही नैतिक।[9]
- प्रौद्योगिकी साधन है, साध्य नहीं: डिजिटल माध्यम का उद्देश्य पारंपरिक मौखिक प्रथाओं को प्रतिस्थापित करना नहीं, बल्कि उनका समर्थन करना है।[3,6]
- बहुविषयक सहयोग आवश्यक है: डिजिटल संग्रहण में तकनीकी, भाषायी, सांस्कृतिक और कानूनी विशेषज्ञता का समन्वय चाहिए।[7]
- दीर्घकालिक प्रतिबद्धता: डिजिटल संरक्षण एक सतत प्रक्रिया है जिसमें निरंतर निवेश, रखरखाव और अद्यतनीकरण की आवश्यकता है।[5]
- नीतिगत सुधार: लोककला और मौखिक परंपराओं के लिए विशिष्ट कानूनी और संस्थागत ढांचा विकसित करना होगा।[10]

भारत जैसे देश में जहाँ सांस्कृतिक विविधता अभूतपूर्व है, डिजिटल संग्रहण की सफलता न केवल भारतीय विरासत के संरक्षण के लिए, बल्कि वैश्विक मानवीय ज्ञान के संवर्धन के लिए भी महत्वपूर्ण है।[1,2,6] मौखिक परंपराएँ हमारी साझा मानवीय विरासत हैं—वे पहचान, मूल्य, ज्ञान और सौंदर्य का स्रोत हैं। उन्हें डिजिटल युग में बचाना और जीवंत रखना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है।

7. References

1. Blackburn, Stuart H., and A. K. Ramanujan, eds. Another Harmony: New Essays on the Folklore of India. *Berkeley:* University of California Press, 1986.
2. UNESCO. Atlas of the World's Languages in Danger. Paris: UNESCO Publishing, 2010.
3. Ong, Walter J. Orality and Literacy: The Technologizing of the Word. London: Routledge, 1982.
4. Ramanujan, A. K. “Three Hundred Ramayanas: Five Examples and Three Thoughts on Translation.” In The Collected Essays of A. K. Ramanujan, edited by Vinay Dharwadker, 131–160. New Delhi: Oxford University Press, 1999.
5. Lynch, Clifford A. “Digital Collections, Digital Libraries and the Digitization of Cultural Heritage Information.” Microform & Imaging Review 31, no. 4 (2002): 131–145.
6. UNESCO. Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage. Paris: UNESCO, 2003. https://ich.unesco.org/en/convention.
7. Schreibman, Susan, Ray Siemens, and John Unsworth, eds. A Companion to Digital Humanities. Oxford: Blackwell Publishing, 2004.
8. Eberhard, David M., Gary F. Simons, and Charles D. Fennig, eds. Ethnologue: Languages of the World. 25th ed. Dallas, Texas: SIL International, 2022. http://www.ethnologue.com.
9. Christen, Kimberly. “Does Information Really Want to Be Free? Indigenous Knowledge Systems and the Question of Openness.” International Journal of Communication 6 (2012): 2870–2893.
10. Anderson, Jane. “Indigenous Knowledge and Intellectual Property Rights.” Australian Institute of Aboriginal and Torres Strait Islander Studies Research Discussion Paper, no. 20 (2005).